रविवार 26 दिसंबर, 2021

विषय — क्रिश्चियन साइंस

स्वर्ण पाठ: यिर्मयाह 17 : 14

"हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊंगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊंगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 103 : 1-6

1 हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,
5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है॥
6 यहोवा सब पिसे हुओं के लिये धर्म और न्याय के काम करता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 30 : 2-4, 11, 12

2 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी और तू ने मुझे चंगा किया है।
3 हे यहोवा, तू ने मेरा प्राण अधोलोक में से निकाला है, तू ने मुझ को जीवित रखा और कब्र में पड़ने से बचाया है॥
4 हे यहोवा के भक्तों, उसका भजन गाओ, और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो।
11 तू ने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला, तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बान्धा है;

12 ताकि मेरी आत्मा तेरा भजन गाती रहे और कभी चुप न हो। हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं सर्वदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा॥

2. 2 राजा 5: 1, 9-15

1 अराम के राजा का नामान नाम सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था, क्योंकि यहोवा ने उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था, और यह शूरवीर था, परन्तु कोढ़ी था।
9 तब नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ।
10 तब एलीशा ने एक दूत से उसके पास यह कहला भेजा, कि तू जा कर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा।
11 परन्तु नामान क्रोधित हो यह कहता हुआ चला गया, कि मैं ने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा हो कर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर के कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेर कर कोढ़ को दूर करेगा!
12 क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयों से अत्तम नहीं हैं? क्या मैं उन में स्नान कर के शुद्ध नहीं हो सकता हूँ? इसलिये वह जलजलाहट से भरा हुआ लौट कर चला गया।
13 तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे, हे हमारे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान कर के शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिये।
14 तब उसने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जा कर उस में सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; उौर वह शुद्ध हो गया।
15 तब वह अपने सब दल बल समेत परमेश्वर के भक्त के यहां लौट आया, और उसके सम्मुख खड़ा हो कर कहने लगा सुन, अब मैं ने जान लिया है, कि समस्त पृथ्वी में इस्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है। इसलिये अब अपने दास की भेंट ग्रहण कर।

3. मत्ती 8: 5 (जब)-10, 13

5 … जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।
7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है।
10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।

13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

4. यूहन्ना 4: 46 (वहां)-53

46 तब वह फिर गलील के काना में आया, जहां उस ने पानी को दाख रस बनाया था: और राजा का एक कर्मचारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था।
47 वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उस से बिनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे: क्योंकि वह मरने पर था।
48 यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे।
49 राजा के कर्मचारी ने उस से कहा; हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहिले चल।
50 यीशु ने उस से कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित है: उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया।
51 वह मार्ग में जा रहा था, कि उसके दास उस से आ मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीवित है।
52 उस ने उन से पूछा कि किस घड़ी वह अच्छा होने लगा उन्होंने उस से कहा, कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया।
53 तब पिता जान गया, कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा, तेरा पुत्र जीवित है, और उस ने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।

5. प्रकाशित वाक्य 1: 1

1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया, कि अपने दासों को वे बातें, जिन का शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए: और उस ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया।

6. प्रकाशित वाक्य 10: 1-3 (*से*:), 8-10 (*से*;)

1 फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर मेघधनुष था: और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के खंभे के से थे।
2 और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी; उस ने अपना दाहिना पांव समुद्र पर, और बायां पृथ्वी पर रखा।
3 और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है।
8 और जिस शब्द करने वाले को मैं ने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा; कि जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले।
9 और मैं ने स्वर्गदूत के पास जा कर कहा, यह छोटी पुस्तक मुझे दे; और उस ने मुझ से कहा ले इसे खा ले, और यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी।

10 सो मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से ले कर खा गया, वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया।

7. प्रकाशित वाक्य 22 : 1, 2

1 फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और
मेंम्ने के सिंहासन से निकल कर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी।
2 और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ था: उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और
वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 136 : 1-8

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है। उन्होंने दावा किया कि कोई भी खुफिया, कार्रवाई, और न ही जीवन भगवान से अलग है। अपने ऊपर आए उत्पीड़न के बावजूद, उसने शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से पुरुषों को बचाने के लिए अपनी दिव्य शक्ति का इस्तेमाल किया।

2. 139 : 4-8, 15-27

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया।

चर्च काउंसिल के वोट के रूप में निर्णय के रूप में क्या किया जाना चाहिए और पवित्र लेखन नहीं माना जाना चाहिए; प्राचीन संस्करणों में प्रकट गलतियाँ; ओल्ड टेस्टामेंट में तीस हजार अलग-अलग रीडिंग, और न्यू में तीन सौ हजार, - इन तथ्यों से पता चलता है कि कैसे एक नश्वर और भौतिक अर्थ दैवीय रिकॉर्ड में चुराया गया था, अपने स्वयं के ह्यू के साथ कुछ हद तक प्रेरित पृष्ठों पर काला पड़ गया। लेकिन गलतियाँ न तो पूरी तरह से दिव्य विज्ञान को देख सकती हैं जो उत्पत्ति से प्रकाशित वाक्य में देखी गई शास्त्रों की विज्ञान, यीशु के प्रदर्शन से शादी करती हैं, न ही भविष्यवक्ताओं द्वारा उपचार को रद्द करती हैं, जो कि भविष्यवाणी करते हैं "राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया" "वही कोने का सिरा हो गया।"

3. 147 : 24-31

हमारे मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, ईसाई उपचार का अभ्यास किया, और अपने छात्रों को इसके दिव्य सिद्धांत की सामान्यताओं को सिखाया; लेकिन उन्होंने बीमारी को ठीक करने और रोकने के इस सिद्धांत को प्रदर्शित करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं छोड़ा। ईसाई विज्ञान में इस नियम की खोज की जानी बाकी थी।

एक शुद्ध स्नेह अच्छाई में रूप लेता है, लेकिन विज्ञान केवल अच्छाई के दिव्य सिद्धांत को प्रकट करता है और इसके नियमों का प्रदर्शन करता है।

4. 107 : 1-3

वर्ष 1866 में, मैं ने जीवन, सत्य और प्रेम के क्रिएचरियन साइंस या ईश्वरीय नियमों की खोज की और अपनी खोज का नाम क्रिश्चियन साइंस रखा।

5. 109 : 11-15, 16-22

अपनी खोज के तीन साल बाद, मैंने माइंड-हीलिंग की इस समस्या का समाधान खोजा, शास्त्रों की खोज की और थोड़ा और पढ़ा, समाज से अलग रखा और एक सकारात्मक नियम की खोज के लिए समय और ऊर्जा समर्पित की। ... मैं जानता था कि सभी सामंजस्यपूर्ण माइंड-एक्शन का सिद्धांत ईश्वर है, और यह कि पवित्र, उत्थान विश्वास द्वारा आदिम ईसाई उपचार में उत्पन्न हुए थे; लेकिन मुझे इस उपचार के विज्ञान का पता होना चाहिए, और मैंने दिव्य रहस्योद्घाटन, कारण और प्रदर्शन के माध्यम से पूर्ण निष्कर्ष के लिए अपना रास्ता जीता।

6. 558 : 1-8

संत उहन्ना लिखते हैं, उनकी पुस्तक के दसवें अध्याय में प्रकाशित सिंट: —

फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर मेघधनुष था: और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के खंभे के से थे।और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी; उस ने अपना दाहिना पांव समुद्र पर, और बायां पृथ्वी पर रखा।

7. 559 : 1-23

इस परी ने अपने हाथ में "एक छोटी सी पुस्तक," सभी को पढ़ने और समझने के लिए खोल दिया। क्या इसी पुस्तक में ईश्वरीय विज्ञान के रहस्योद्घाटन, "दाहिने पैर" या प्रमुख शक्ति है, जो समुद्र पर थी, - प्राथमिक, अव्यक्त त्रुटि, सभी त्रुटि के दृश्य रूपों का स्रोत? देवदूत का बायां पैर पृथ्वी पर था; अर्थात्, दृश्य त्रुटि और श्रव्य पाप पर एक द्वितीयक शक्ति का प्रयोग किया गया था। वैज्ञानिक चिंतन का "हुआ डाउन वर्ड" महाद्वीप और महासागर से लेकर ग्लोब के रिमोटेस्ट बाउंड तक पहुंचता है। सत्य की अश्रव्य आवाज मानव मन के लिए है, "जब एक शेर दहाड़ता है।" यह रेगिस्तान में और भय के अंधेरे स्थानों में सुनाई देता है। यह बुराई के "सात आवाज़" पैदा करता है, और गुप्त अव्यवस्थाओं की पूरी डायपसन उच्चारण करने के लिए उनकी अव्यक्त ताकतों को रोकता है। तब सत्य की शक्ति प्रदर्शित होती है, — त्रुटि के विनाश में प्रकट किया जाता है। फिर सद्भाव रोने से एक आवाज होगी: “जाओ और छोटी किताब ले जाओ। ... इसे खा ले, और यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी।" नश्वर, स्वर्गीय सुसमाचार का पालन करते हैं। दिव्य विज्ञान को लें। इस किताब को शुरू से आखिर तक पढ़ें। इसका अध्ययन करें, इसका पालन करें। यह वास्तव में अपने पहले स्वाद में मीठा

होगा, जब यह आपको ठीक करता है; लेकिन बड़बड़ाहट सत्य पर नहीं, अगर आपको इसका पाचन कड़वा लगता है।

8. 55 : 15-29

अपने स्वयं के पंखों के नीचे बीमार और पापी लोगों को इकट्ठा करके, सत्य का अमर विचार सदियों से चल रहा है। मेरी थकी हुई आशा उस सुखद दिन को महसूस करने की कोशिश करती है, जब मनुष्य मसीह के विज्ञान को पहचान लेगा और अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्यार करेगा, — जब वह ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और उस परमात्मा की उपचार शक्ति का एहसास करेगा जो उसने किया है और मानव जाति के लिए कर रहा है। वादे पूरे होंगे। दिव्य चिकित्सा के प्रकट होने का समय हर समय है; और जो कोई भी दिव्य विज्ञान की वेदी पर अपने सांसारिक स्तर को रखता है, अब मसीह के प्याले को पीता है, और वह ईसाई उपचार की भावना और शक्ति से संपन्न है।

संत उहन्ना के शब्दों में: "वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।" इस कम्फ़र्टर को मैं ईश्वरीय विज्ञान समझता हूँ।

9. 150 : 4-17

सत्य की हीलिंग पावर को एक अभूतपूर्व प्रदर्शनी के बजाय एक स्थायी, शाश्वत विज्ञान के रूप में व्यापक रूप से प्रदर्शित किया जाता है। इसका प्रकट होना "पृथ्वी पर शांति, पुरुषों के प्रति सद्भाव" के सुसमाचार का आने वाला है। यह आ रहा है, जैसा कि मास्टर द्वारा वादा किया गया था, इसकी स्थापना पुरुषों के बीच एक स्थायी वितरण के रूप में है; लेकिन क्रिश्चियन साइंस का मिशन अब, जैसा कि इसके पहले के प्रदर्शन के समय में था, मुख्य रूप से शारीरिक उपचार में से एक नहीं है। अब, जैसा कि, संकेत और चमत्कार शारीरिक रोग के आध्यात्मिक उपचार में गढ़ा जाता है; लेकिन ये संकेत केवल इसकी दिव्य उत्पत्ति को प्रदर्शित करने के लिए हैं, - दुनिया के पापों को दूर करने के लिए मसीह-शक्ति के उच्च मिशन की वास्तविकता को प्रमाणित करने के लिए।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन

सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6